ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 206-211
www.allresearchjournal.com
Received: 14-03-2022
Accepted: 09-05-2022

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा
Assistant Professor, Faculty of Education, GLA University, Mathura, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
डॉ. देवकी नन्दन शर्मा
Assistant Professor, Faculty of Education, GLA University, Mathura, Uttar Pradesh, India

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व के आयाम, लिंग व क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा

सारांश
प्रस्तुत शोध लेख में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व के आयाम, लिंग व क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु शून्य परिकल्पना ”विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का पहला आयाम (निर्णय क्षमता), लिंग व क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है” का निर्माण किया गया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि एवं न्यादर्श हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का चयन करके 11वीं कक्षा के कुल 600 विद्यार्थियों जिसमें 300 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र एवं 300 विद्यार्थियों का चयन शहरी क्षेत्र से किया गया। उपकरण के रूप में अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित भेददर्शी व्यक्तित्व अविष्कारिका, 2011, Differential Personality Inventory (DPI) तथा नलिनी राव द्वारा निर्मित राव सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि उच्च निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता निम्न निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों से अधिक है। सामाजिक परिपक्वता पर निर्णय क्षमताका सार्थक प्रभाव पाया गया व उच्च निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता निम्न निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया, छात्रों की सामाजिक परिपक्वता छात्राओं से अधिक पायी गयी। सामाजिक परिपक्वता पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव पाया गया। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी।

कूटशब्द : उच्च शिक्षा, सामाजिक परिपक्वता, व्यक्तित्व के आयाम, लिंग व क्षेत्र

प्रस्तावना
हमारे देश में सामान्य शिक्षा का उद्देश्य बालकों को उन प्रविधियों से अवगत कराना है, जिससे उन्हें आगे की शिक्षा प्राप्त करने में सुगमता हो तथा अपने वातावरण के उत्तरदायित्वों को समझने तथा जीवन निर्वहन करने के योग्य बनाना है। इसके उपरान्त माध्यमिक शिक्षा पूर्ण रूप से विशिष्ट होती है। इसके विशिष्ट होने के दो प्रधान कारण हैं पहला यह है कि माध्यमिक शिक्षा छात्रों को मध्यम् स्तर के व्यवसायों के योग्य बनाती है और दूसरे यह है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र उन विधियों, प्रविधियों तथा उपकरणों को समझ जाता है जिनका उपयोग वह उच्च शिक्षा के लिए करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य शिक्षा समाजोन्मुखी होती है और व्यवसायिक शिक्षा व्यवसायोन्मुखी किन्तु हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा न तो छात्रों को व्यवसायिक जीवन के लिए तैयार करती है और न उन्हें उच्च शिक्षा के लिए ही सक्षम बनाती है। अतः स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक शिक्षा का सामंजस्य उच्च तथा व्यवसायिक शिक्षा से तब तक सम्भव नहीं हो सकता है, जब तक की इसे स्वतंत्र इकाई के रूप में स्वीकार करते हुए इसकी प्रकृति को मनोवैज्ञानिक नियमों सिद्वान्तों के अनुरूप ढाला नहीं जायेगा।

सामाजिक परिपक्वता
विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। सामाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक विचारों के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। इस प्रकार बालक की सामाजिक उन्नति के दो रूप हैं, एक व्यक्ति अपने समाज के तरीकों को सीखता है, इसे सामाजिकता कहते है। दूसरी तरफ व्यक्ति अपने सामाजिक दायरे को प्रगतिशील रूप से बढ़ाता है। वह अपने समूह में अधिक से अधिक

लोगों को शामिल करना सीखता है जहाँ वह अपने घर जैसा अनुभव करता है वह स्थानीय समुदाय का एक नागरिक बन जाता है।
हरलॉक (Hurlok) के मतानुसार सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का प्राप्त करना है। जिसका अर्थ समूह के आदर्शों नैतिकता एवं परम्पराओं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है और एकता के विचार अन्तः संचार और सहयोग को मन में रखना है। कोई भी बालक सामाजिक पैदा नहीं होता और उसे अन्य लोगों के साथ समायोजन करना सीखना चाहिए। यह योग्यता सभी प्रकार के व्यक्तियों के साथ केवल अवसर के परिणामस्वरूप ही प्राप्त की जा सकती है। विशेषकर उन वर्षों के दौरान बालक की सामाजिकता उन्नति की एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है। उन्नतियों की तरह यह उन लोगों के लिए योजना और निर्देशन की मांग करती है जो बच्चों के लिए अधिक उन्नत परिणाम को प्राप्त करवाने के लिए जिम्मेदार हैं। सामाजिक समूह बालक के व्यक्तित्व पर एक परिलक्षित प्रभाव की शक्ति डालता है।

व्यक्तित्व
व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के पर्सनाल्टी शब्द का पर्याय है, जो लैटिन भाषा के पर्सोना शब्द से लिया गया है। पर्सोना का अर्थ मास्क, नकाब या मुखौटा है। ग्रीक अभिनेता इसे अपने कार्य या चरित्र के अनुरूप अभिनय से पूर्व पहना करते थे। पर्सोना से संबंधित होने के कारण प्रारंभ में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप–रंग, आकार आदि से ही लिया जाता था परन्तु मनुष्य की आकृति ही मनुष्य के व्यक्तित्व का बोध नहीं कराती। व्यक्तित्व मात्र बाह्य बनावट से ही निर्धारित नहीं होता है अपितु उसके लिये कुछ आंतरिक गुणों का होना भी अत्यंत आवश्यक होता है। आंतरिक गुणों के अभाव में व्यक्तित्व अपूर्ण समझा जाता है। वास्तव में व्यक्तित्व न शरीर है, न मस्तिष्क और न व्यक्ति का बाह्य रूप, व्यक्तित्व तो उसके पूरे व्यवहार का दर्पण है। सामान्य दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का तात्पर्य व्यक्ति के उन प्रभावक गुणों से होता है जो दूसरों पर विजय पाने में सहायक होते हैं। दार्शनिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व पूर्णता का एक आदर्श है, यह आत्मज्ञान है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्तित्व उन समस्त गुणों का संगठन है जो कि समाज में व्यक्ति का कार्य या पद निश्चित करता है। इस प्रकार व्यक्तित्व को सामाजिक प्रभावकता के रूप में माना जा सकता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व का संबंध वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों से है। व्यक्तित्व का विकास जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है।
व्यक्तित्व अंतर्निहित गुणों की संगठित इकाई है अर्थात् शारीरिक गुण, बौद्धिक गुण, संवेगात्मक गुण, नैतिक एवं चारित्रिक गुण एवं अन्य गुण। व्यक्तित्व जिन गुणों की संगठित इकाई है अर्थात् व्यक्तित्व जिन तत्वों से निर्मित होता है वे तत्व या गुण ही स्वयं परिवर्तनशील हैं। अतः व्यक्तित्व भी परिवर्तनशील है अर्थात् गुण परिवर्तनशील है उन्हें बढ़ाया, बनाया और उनका विकास किया जा सकता है। व्यक्तित्व को हम किसी व्यक्ति के चरित्र से पृथक नहीं कर सकते जिस प्रकार चित्र विभिन्न रंगों का मेल नहीं है, कविता विभिन्न शब्दों का योग नहीं है उसी प्रकार व्यक्तित्व व्यक्ति की बुद्धि, चरित्र तथा व्यवहार आदि का योग नहीं है परन्तु कुछ और ही है। व्यक्तित्व में व्यक्ति की आत्मा की छाप रहती है। वस्तुतः व्यक्तित्व की परिभाषा नहीं दी जा सकती। यह तो केवल समझने की वस्तु है। आलपोर्ट (1937) के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन निर्धारित करता है।" आइजेन्क (1952) के अनुसार "व्यक्तिगत व्यक्ति के चरित्र, चित्र प्रकृति ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब–करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।"

व्यक्तित्व के समस्त अंगों को हम दो रूपों में देख सकते है– वे अंग जो प्रत्यक्ष दिखाई देते है, वे अंग जो प्रत्यक्ष तो दिखाई नहीं देते परंतु जिनका पता मानव द्वारा की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं के आधार पर किया जा सकता है। प्रथम के अंतर्गत आयेंगे–उनकी शारीरिक बनावट, सामाजिकता, दूसरे के अंतर्गत आयेंगे–उनके बौद्धिक कार्य, संवेगात्मक, स्थिरता, नैतिक एवं चारित्रिक गुण अर्थात् शारीरिक गुण, बौद्धिक गुण, संवेगात्मक गुण, नैतिक एवं चारित्रिक गुण एवं अन्य गुण।
एक व्यक्ति का अपने वातावरण में समायोजन उसके व्यक्तित्व के संगठन के परिणाम स्वरूप ही संभव होता है। बोरंग और उनके सार्थियों (1962) के अनुसार "व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ विशेष या सतत् समायोजन के रूप में व्यक्तित्व को परिभाषित कर सकते है।" वाल्टर मिसेल (1981) के अनुसार "व्यक्तित्व का अर्थ व्यवहार के उस विशिष्ट पैटर्न से होता है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की परिस्थितियों के साथ होने वाले समायोजन को निर्धारित करता है।" संगठित व्यक्तित्व पूर्ण रूप से दृढ़ तथा परिस्थितियों में समायोजित रहता है। एरिक्सन (1959) के अनुसार व्यक्तित्व के संगठन को तादात्म्य निर्माण के रूप में परिभाषित किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण
उच्च शिक्षा – प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर का अर्थ कक्षा–12 से है।

विद्यार्थी – प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों का अर्थ कक्षा–12 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से है।

सामजिक परिपक्वता – प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्वता का तात्पर्य बालक के सामाजिक विकास की पूर्णता से है।

व्यक्तित्व – आलपोर्ट (1937) के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन निर्धारित करता है।"

समस्या कथन –
''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व के आयाम, लिंग व क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन''

समस्या के चर
स्वतंत्र चर
- व्यक्तित्व
- लिंग – छात्र, छात्रा
- क्षेत्र – ग्रामीण, शहरी

आश्रित चर
- सामाजिक परिपक्वता

शोध का उद्देश्य
विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व के आयाम, लिंग व क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना
विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का पहला आयाम (निर्णय क्षमता), लिंग व क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

शोध प्रविधि
प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया है। प्रत्येक विकासखण्डों में से 30 प्रतिशत विद्यालयों के रूप में 11वीं कक्षा के कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 300 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र एवं 300 विद्यार्थियों का चयन शहरी क्षेत्र से किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

1. अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित भेददर्शी व्यक्तित्व अविष्कारिका, 2011), Differential Personality Inventory (DPI)
2. नलिनी राव द्वारा निर्मित राव सामाजिक परिपक्वता मापनी

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या–

HoI विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का पहला आयाम (निर्णय क्षमता), लिंग व क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

सारणी 1: विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का पहला आयाम (निर्णय क्षमता), लिंग व क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर प्रभाव के लिए प्रसरण विश्लेषण सारांश

स्रोत	वर्गों का योग	स्वातंत्र्य स्तर	मध्यमान	F का मान	सार्थकता स्तर
निर्णय क्षमता	10828.05	1	10828.05	8.99*	.003
लिंग	107881.54	1	107881.54	89.61*	.000
क्षेत्र	73089.91	1	73089.91	60.71*	.000
निर्णय क्षमता व लिंग	872.48	1	872.48	.72*	.395
निर्णय क्षमता व क्षेत्र	3.98	1	3.98	.003*	.954
लिंग व क्षेत्र	28321.30	1	28321.30	23.52*	.000
निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र	164.72	1	164.72	.137*	.712
त्रुटि	712711.48	592			
योग	28802689.00	600			
संशोधित योग	1069685.58	599			

*.01 स्तर पर सार्थकता, **.05 स्तर पर सार्थकता, NS- Not Significant

सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि–

निर्णय क्षमता का मुख्य प्रभाव

व्यक्तित्व का पहला आयाम निर्णय क्षमता के लिए F का मान 8. 99 है जो df = 1 / 599 पर .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व का पहला आयाम निर्णय क्षमताका मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। निर्णय क्षमता के मध्यमानों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि निम्न निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 203. 27 तथा उच्च निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 213.16 है। इससे स्पष्ट होता है कि उच्च निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों का मध्यमान निम्न निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है अर्थात् उच्च निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता निम्न निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। अतः निर्णय क्षमता के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसे सारणी एवं आरेख में प्रस्तुत किया गया है :–

सारणी – उच्च एवं निम्न निर्णय क्षमता वाले विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

निर्णय क्षमता	उच्च	निम्न
M	213.16	203.27
SD	42.35	37.94
N	263	337

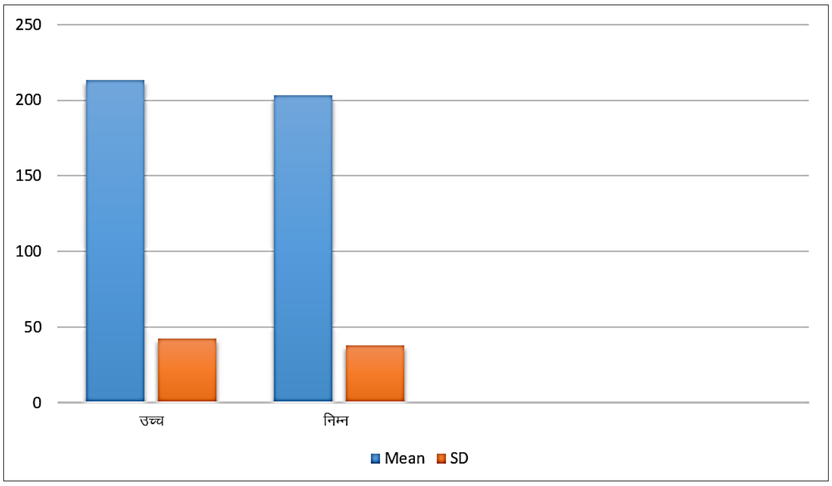

आरेख 1: उच्च एवं निम्न वाले विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन आरेख

लिंग का मुख्य प्रभाव

लिंग के लिए F का मान 89.61 है जो df = 1 / 599 पर .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। लिंग के मध्यमानों का अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 223.83 तथा छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का

मध्यमान 192.61 है। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान से अधिक है अर्थात् छात्राओं की तुलना में छात्रों की सामाजिक परिपक्वता अधिक पायी गयी। अतः लिंग के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 2: छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

लिंग	छात्र	छात्राएं
M	223.83	192.61
SD	39.22	36.70
N	300	300

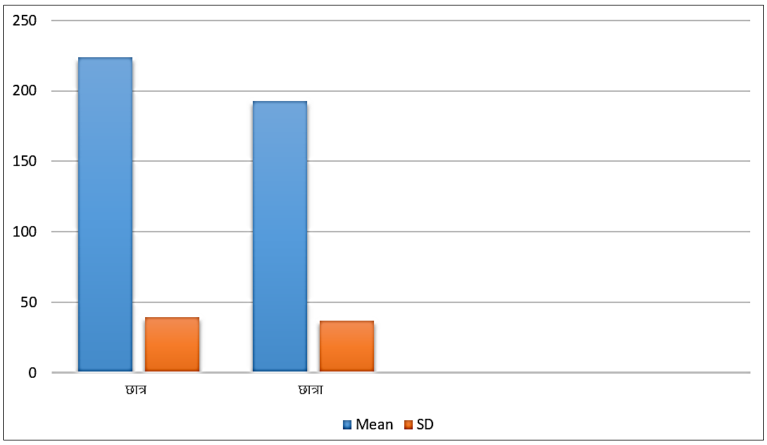

आरेख 2: छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन आरेख

क्षेत्र का मुख्य प्रभाव

क्षेत्र के लिए F का मान 60.71 है जो df = 1 / 599 पर .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सामाजिक परिपक्वता पर क्षेत्र का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। क्षेत्र के मध्यमानों का अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 221.07 तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 195.37 है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता अधिक पायी गयी। अतः क्षेत्र के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी – शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्षेत्र	शहरी	ग्रामीण
M	221.07	195.37
SD	42.06	36.19
N	300	300

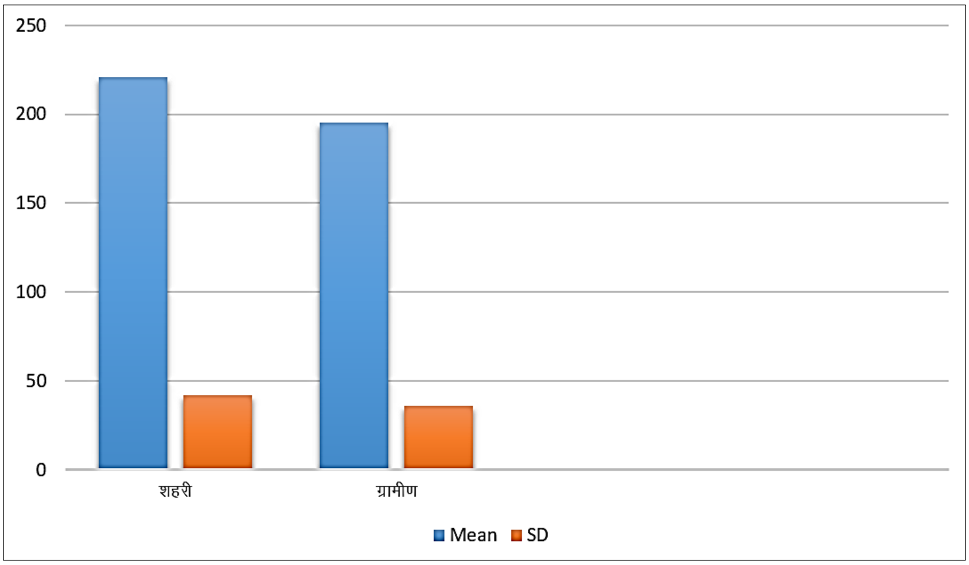

आरेख 3: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन आरेख

निर्णय क्षमता लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव निर्णय क्षमता लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए ‍ॅ का मान .72 है जो df = 1 / 599 पर .05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं पाया गया। विद्यार्थियों के निर्णय क्षमताव लिंग का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। अतः निर्णय क्षमताव लिंग के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निर्णय क्षमता व क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव

निर्णय क्षमता व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान .003 है जो df = 1 / 599 पर .05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं पाया गया। विद्यार्थियों के निर्णय क्षमताव क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। अतः निर्णय क्षमताव क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

लिंग व क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव

लिंग व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान 23.52 है जो df = 1 /599 पर .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। लिंग व क्षेत्र के मध्यमानों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 202.98 की तुलना में शहरी छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 244.67 अधिक पाया गया तथा ग्रामीण छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्यमान 187.76 की तुलना में शहरी छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 197.46 अधिक पाया गया। ग्रामीण छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 202.98 ग्रामीण छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्यमान 187.76 से अधिक पाया गया तथा शहरी छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 244.67 शहरी छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्यमान 197.46 से अधिक पाया गया। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता से अधिक है अतः लिंग व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसे सारणी एवं आरेख में प्रस्तुत किया गया है :–

सारणी – लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

लिंग क्षेत्र	शहरी	ग्रामीण
छात्र	M=244.67 SD=28.59 N=150	M=244.67 SD=36.91 N=150
छात्रा	M=197.46 SD=37.22 N=150	M=187.76 SD=32.87 N=150

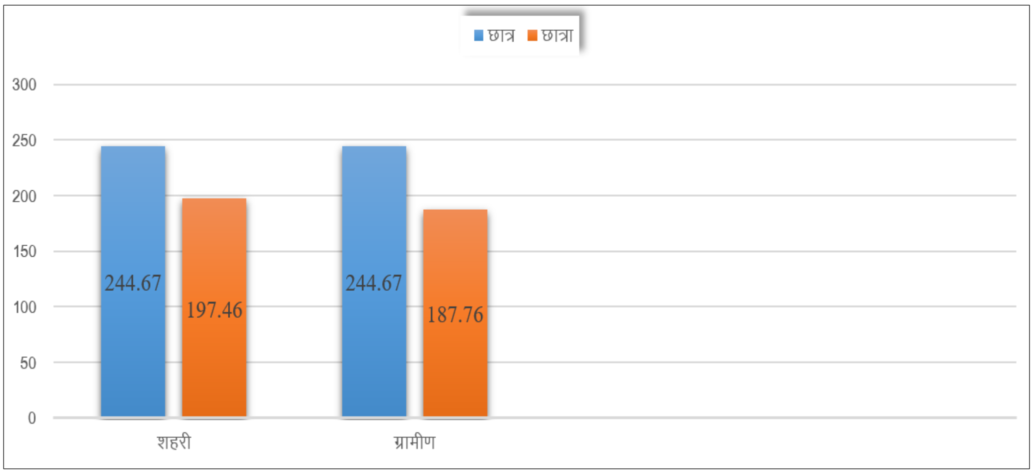

आरेख 4: लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन आरेख

निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र का अंतः क्रियात्मक प्रभाव

निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए F का मान .137 है जो df = 1 / 599 पर .05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं पाया गया। अतः विद्यार्थियों के निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। अतः निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणामः मुख्य प्रभाव

निर्णय क्षमता का प्रभाव

सामाजिक परिपक्वता पर निर्णय क्षमता का सार्थक प्रभाव पाया गया। उच्च निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता निम्न निर्णय क्षमतावाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी।

लिंग का प्रभाव

सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। छात्रों की सामाजिक परिपक्वता छात्राओं से अधिक पायी गयी।

क्षेत्र का प्रभाव

सामाजिक परिपक्वता पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव पाया गया। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी।

अंतः क्रियात्मक प्रभाव

सामाजिक परिपक्वता पर निर्णय क्षमताव लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। सामाजिक परिपक्वता पर निर्णय क्षमताव क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। सामाजिक परिपक्वता पर निर्णय क्षमता, लिंग व क्षेत्र का प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

निष्कर्ष– अंतः क्रियात्मक परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि परिकल्पना विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर सभी मुख्य प्रभावों तथा लिंग व क्षेत्र के अंतःक्रियात्मक प्रभावों के लिए अस्वीकृत की जाती है तथा शेष सभी अंतःक्रियात्मक प्रभावों के लिए उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, प्रोफेसर एस.पी. एवं गुप्ता डॉ. अल्का – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
2. सिंह, डॉ. अरूण कुमार– शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी
3. लाल, आर एवं जैन – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
4. Bhatiya Anil, Bisht Devendra, Singh. Family Relationship and social maturity as Related to

Absenteeism. Indian Journal of Psychometry and Education, Jan, 2002 33(1), 67-72.
5. Chandra Ritu, Azimmudin Sheikh. Influence of Intelligence and Gender on Academic Achievement of secondary school students of Lucknow City. IOSR Journal of Humanities and social science. 2013;17(5):9-14, www.iosrjournals.org.
6. Chaubey, Aruna, Helode RD. A study of Sex differences in the personality profiles of male and female college students. International Journal of Research in Humanities, Art and Literature (Impact: IJRHAL) 2014;2(5):163-168.
7. Choudhary Poonam, Madhuri. Social maturity Adolescents in Relation to ther gender and locality: A comparitive Analysis. Scholarly Research Journal for Humanity science & English Language. 2014;1(6):928. www.srjis.com.
8. Diwan, R. The socio economic status and social maturity. The progress of Education 1998;LXXIII(5):117-119.
9. Dubey M. A study on Psychological Determinants of Academic success of Rural and Urban Boys. In Indian Educational Abstracts, NCERT, Issue 7 & 8, July-Jan 1999-2000, referred from Shodh Samiksha Aur Mulyankan, 1999-2012;4:65-66.
10. Goel, Swami Pyari. Feeling of security, Family attachment and values of adolescent girls in relation to their educational achievement. Indian Journal of Psychometry and Education. 2002;33(1):25-28.
11. Grover H, Audichya S. A study on self - concept of adolescents.Indian Psychological Review. 2013;80(4):203sa.